

प्रदर्शन कला -320

प्रदर्शन कला-320

खंड A: नृत्य

A1 - कथक

A2 - भरतनाट्यम

A3 - उड़ीसा

A 4 - कुचिपुडी

A 5 - मणिपुरी

A6 - कथकली

खंड B: ड्रामा-थिएटर

खंड C: संगीत

C1 - हिंदुस्तानी

C2 - कर्नाटक

C3 - रवीन्द्र संगीत

C4 - तालवाद्य

कक्षा 12 के लिए पाठ्यक्रम

प्रदर्शन कला -320

टिप्पणी:

50 प्रश्नों वाले एक प्रश्न पत्र में से 40 प्रश्नों को हल करने की आवश्यकता होगी।
इसमें तीन खंड होंगे यानी खंड A (नृत्य), खंड B (नाटक-रंगमंच), और खंड C (संगीत)।
अभ्यर्थी किसी भी अनुभाग का चयन कर सकते हैं। और खंड A और खंड C में से केवल
एक उप-खंड को चुनने की जरूरत है।

खंड A: नृत्य

A1: कथक

1. भारत की अन्य नृत्य शैलियों का संक्षिप्त इतिहास।
2. **अभिनय** शब्द की एक बुनियादी समझ और इसके चार पहलुओं की परिभाषा: अंगिका, वाचिका, आचार्य और सात्विक।
3. कथक नृत्य के तीन घरानों (लखनऊ, जयपुर, बनारस) से परिचय
4. रस: नौ रसों की परिभाषा और व्याख्या।
5. निम्नलिखित शब्दों का ज्ञान: संगीत, ताल, लय, अंगहारा, भ्रामरी, लोकधर्मी, नाट्यधर्मी, रस और भाव।
(संक्षिप्त टिप्पणी)
6. नृत्य शैली की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान。
 - a) निम्नलिखित की परिभाषा:
 - i. वंदना
 - ii. तिहाई
 - iii. आमद
 - iv. टोड़ा/टुकड़ा
 - v. परन
 - vi. चक्रदार टोड़ा / टुकड़ा और परन
 - vii. गतनिकस
 - viii. गतभाव
 - a. दादरा, कहारवा, रूपक, झप ताल, तीन ताल के ठेका का ज्ञान
 - b. ताली, खाली, सम, तिहाई की परिभाषा।
 - c. टुकड़ा/टोड़ा और परन को अंकित करने की क्षमता।

पारंपरिक वेशभूषा और श्रृंगार से परिचय।

प्रदर्शन कला -320

A2: भरतनाट्यम नृत्य

1. पूर्व नृत्य शैली के मुख्य प्रतिपादकों और योगदानकर्ताओं के जीवन इतिहास से परिचय होना।
(रुक्मिणी देवी अरुंडेल, बाला सरस्वती, मीनाक्षी सुंदरम पिल्लै, तंजौर चौकड़ी)
2. अभिनय दर्पण की विषयवस्तु से परिचय होना। (नृत्य के अध्याय और पहलू उनके अंतर्गत हैं)।
3. निम्नलिखित शब्दों का ज्ञान:
 - i. नृत, नृत्य, नाट्य (अभिनय दर्पण से संस्कृत श्लोक और मूल परिभाषा) तांडव (7 विस्तृत कहानियों के साथ तांडव) लास्य, लोकधर्मी, नाट्यधर्मी (परिभाषाएँ उदाहरण के साथ)
 - ii. स्थान, चारी, मंडला, भ्रामरी, उत्प्लावन (अभिनय दर्पण से श्लोक और अर्थ)
 - iii. अभिनय (अभिनय दर्पण से अंगिका, वाचिका, सात्विक, अहार्य-श्लोक का अर्थ)
 - iv. संगीत, ताल, लय (पद की परिभाषा, सात पद, तीन तरीके)
 - v. रस (नौ जातियों के नाम और उनके अंग्रेजी अर्थ)
4. विशेष नृत्य शैली की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान (अध्ययन किए जाने वाले प्रस्तावित नृत्य शैली में से कोई भी -

निम्नलिखित की परिभाषाएँ:

- a. अराइमंडी, मुझुमंडी, कुट्टनम, कोरवई, करवई, अडावु, शोल्लू, अराधि, थेरुमानम, जाति, जाति, गति, अवतारन, यति, तलंगा, थातुकाड़ी, नट्टुवंगम, अरंगेत्रम
5. चयनित नृत्य शैली की पारंपरिक वेशभूषा से परिचय होना

A3: कुचिपुडी नृत्य

1. अध्ययन के लिए एक के अलावा अन्य क्षेत्र के कुछ पारंपरिक नृत्य शैलियों का एक संक्षिप्त इतिहास और परिचय।
2. नृत्य शैली, अतीत और वर्तमान के प्रमुख प्रतिपादकों के जीवन इतिहास से परिचय होना।
3. निम्नलिखित शब्दों का ज्ञान:
 - (i) नृत, नृत्य, नाट्य, तांडव, लास्य, लोकधर्मी, नाट्यधर्मी
 - (ii) मुखजा अभिनय के विशेष संदर्भ में चतुर्विध अभिनय (अंगिका, वाचिका, सत्यिका, अहार्य)
 - (iii) संचारी भव, सात्विक भव:
4. कुचिपुडी में प्रयुक्त रचनाओं के प्रकार और प्रारूप निम्नलिखित की परिभाषाएँ:
 - (a) रंगपूजा, शब्ददम, अष्टपदी, कालापम, (भामा कलापम, गोला कलापम)।

प्रदर्शन कला -320

A4: ओडिसी नृत्य

- छऊ की तीन शैलियों के बारे में प्रारंभिक ज्ञान: मयूरभंज, सरायकेला और पुरुलिया।
- तीन गुरुओं के जीवन और योगदान पर संक्षिप्त टिप्पणी: गुरु पंकज चरण दास, गुरु केलुचरण महापात्र, और गुरु देबा प्रसाद दास।
- ग्रंथों का प्रारंभिक परिचय; नाट्य शास्त्र, अभिनय दर्पण और अभिनय चंद्रिका:
 - लेखक की पहचान (अनुमानित तिथि)
 - इसमें शामिल व्यापक क्षेत्रों का मूल अवलोकन प्रत्येक पाठ का संदर्भ।
 - प्रत्येक पाठ के अनुसार नृत्य की उत्पत्ति संबंधी मिथक।
- अभिनय शब्द की एक बुनियादी समझ और इसके चार पहलुओं की परिभाषा: अंगिका, वाटिका, आचार्य, और सात्विक।
- रस: नौ रस की परिभाषा और संक्षिप्त व्याख्या।
- इस पर संक्षिप्त टिप्पणी:
 - ओडिसी के आचार्य।
 - ओडिसी की संगीत संगत।
- निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या: (इकाई IV कक्षा XI)
 - नृत, नृत्य और नाट्य:
 - मात्रा, लय, ताल, अवरतन, विभाग (अंग)
 - तांडव और लास्य
 - नाट्यधर्मी और लोकधर्मी
- उड़ीसा के लोक नृत्यों के कुछ नाम लिखिए

A5: मणिपुरी नृत्य

- नृत्य के अतीत और वर्तमान के प्रमुख प्रतिपादकों के जीवनवृत्त से परिचय।
- अभिनय दर्पण की सामग्री से परिचय।
- निम्नलिखित शब्दों का ज्ञान:
 - नृत, नृत्य और नाट्य। तांडव, लास्य, लोक धर्मी, नाट्यधर्मी।
 - अभिनय: अंगिका, वाचिका, अहार्य और सात्विक।
 - संगीत: ताल, लय।
 - रस: स्थिर भव, संचारी भव।

प्रदर्शन कला -320

4. शैली के तकनीकी शब्दों का ज्ञान:

- चली, भंगी, लोंगलेई, उपलेई
- विभिन्न प्रकार के चोलोम: करताल चोलोम, खुबक इसेई चोलोम, पुंगचोलोम।
- संकीर्तन। विभिन्न ताल, राजमेल, मेनकुप, तनछाप।
- विभिन्न प्रकार के रस।

5. पारंपरिक वेशभूषा और प्रस्तुत नृत्य शैली के लिए मेकअप से परिचय होना।

- राधा और गोपियों के लिए पोटलोई और इसके विभिन्न घटक
- कृष्ण की पोशाक।
- वैष्णव तिलक पर बल देने के साथ मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य के लिए विशिष्ट पारंपरिक श्रृंगार।

A6: कथकली नृत्य

1. अतीत और वर्तमान दोनों के नृत्य शैलियों के महान आचार्यों के जीवन इतिहास से परिचय होना।

2. हस्त लक्षण दीपिका और नाट्यशास्त्र की सामग्री से परिचय।

3. निम्नलिखित शब्दों का ज्ञान:

- नृत, नृत्य, नाट्य, तांडव, लास्य, लोकधर्मी, नाट्यधर्मी।
- अंग, उपांग, प्रत्यांग
- अभिनय (अंगिका, वाचिका, सात्विक, अहारय) हस्त-अभिनय के विशेष संदर्भ में, मुखज-अभिनय और नेत्र-अभिनय।
- संगीत, ताल, लय
- रस, रासदृष्टि, स्थिरभाव, स्थिरदृष्टि, संचारीभाव, भाव, विभाव, अनुभाव, और सात्विक भाव,

4. कला शैलियों की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान।

- मुटियाट्ट, थेय्यम, कूटियाट्टम, रामनट्टम, कृष्णाट्टम, ओट्टंथुलाल, और कलारिपयट्ट
- हस्तस - हस्तलक्षणदीपिका से सम्युत, असम्युत, मिश्र, नानर्थ।
- काल साधकम् इरतिवतम्।
- कलासम, अष्टकालसम, इलकियाट्टम, चोलियट्टम
- केली, अरंगु केली (शुद्ध मदालम), आजम, पुरप्पाडु, मेलपाडा और धनसी
- चुट्टी, पच्छा, काठी, थाड़ी, कारी, मिनुक्कू
- रस, रसदृष्टि, स्थायीभाव, स्थायीदृष्टि, संचारीभाव, मनोधर्म, छोलियाअट्टम और इलकियाट्टम
- प्रायोगिक के तहत सीखी गई ताल-अंकन लिखने की क्षमता।

5. चयनित नृत्य शैली के पारंपरिक परिधानों और श्रृंगार से परिचय।

6. कथकली संगीत के गायन और ताल दोनों का ज्ञान।

प्रदर्शन कला -320

खंड बी: नाटक-रंगमंच

इकाई I: आधुनिक और समकालीन भारतीय रंगमंच

- प्रमुख आधुनिक और समकालीन शैलियों तथा कार्यों का हिंदी / अंग्रेजी में सर्वेक्षण
- ✓ रवींद्रनाथ टैगोर, भारतेन्दु हरिश्चंद्र
- ✓ विजय तेंदुलकर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, बादल सरकार, शंकर शेष, गिरीश कर्नाड, चंद्रशेखर कंबरी

(छात्र उपर्युक्त नाटककारों के एक पाठ (एक नाटक) को पहचान कर उसका अध्ययन कर सकता है)

- भारतीय रंगमंच संगठनों की समीक्षा - एनएसडी, संगीत नाटक अकादमी, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों
- आधुनिक भारतीय रंगमंच के कलाकार

इकाई II: आधुनिक और पश्चिमी रंगमंच

- प्रमुख समकालीन शैलियों का सर्वेक्षण और अंग्रेजी में किए गए कार्य या अंग्रेजी अनुवाद
- ✓ चेकोव, इब्सन, स्ट्रिंडबर्ग, शॉ, ओ'नील, इओनेस्को, बेकेट, पिंगर, स्टॉपर्ड

(छात्र उल्लिखित नाटककारों के एक पाठ की पहचान और अध्ययन कर सकता है)

इकाई III: रंगमंच प्रस्तुति - प्रबंधन और प्रदर्शन

- रंगमंच प्रबंधन और विपणन पर पाठ-सामग्री

इकाई IV: अभिनय सिद्धांत और व्यवहार का सर्वेक्षण

- स्टानिस्लावस्की, स्ट्रासबर्ग पर पाठ-सामग्री

इकाई V: अभिनय सिद्धांत और व्यवहार का सर्वेक्षण

- नाटक प्रस्तुति पर पाठ-सामग्री

इकाई VI: रंगमंच प्रस्तुति- रंगमंच वास्तुकला और प्रस्तुति अभिकल्पन

- रंगमंच वास्तुकला का इतिहास
- प्रस्तुति अभिकल्पन-रंग सिद्धांत, सेट, वेशभूषा, प्रकाश व्यवस्था पर पाठ-सामग्री

इकाई VII: अनुसंधान परियोजना का विकास और दस्तावेजीकरण

- रंगमंच के विभिन्न पहलुओं में अनुसंधान परियोजनाओं के उदाहरण
- व्यक्तिगत परियोजना की व्यापकता का चयन
- परियोजना के लिए मीडिया और स्रोतों का उपयोग करना

प्रदर्शन कला -320

खंड सी: संगीत

C1: हिंदुस्तानी राग

इकाई 1:

- निम्नलिखित का संक्षिप्त अध्ययन:
ग्राम, मुर्छाना, वर्ण, अलंकार, आलाप, तान।
- निम्नलिखित का संक्षिप्त अध्ययन:
गमक, मींद, कान, खटका, मुर्की, कृतन, जमजमा, घसीट, सुत।

इकाई 2:

- निम्नलिखित का अध्ययन करें:
रागों का वर्गीकरण- प्राचीन, मध्यकालीन, और आधुनिक
रागों के समय सिद्धांत का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3:

- निम्नलिखित का विस्तृत अध्ययन:
 1. संगीत रत्नाकर
 2. संगीत पारिजात
- इनायत खान, मुश्ताक अली खान, अलाउद्दीन खान, अब्दुल हलीम जफर का जीवन रेखाचित्र और योगदान

इकाई 4:

- ताल अंकन के साथ निर्धारित तालों का विवरण,
दुगुन, तिगुन और चौगुन:
झपटला
रूपक
तिलवाड़ा
धामर
चुने गए उपकरण के विभिन्न भागों और ट्यूनिंग का अध्ययन।

इकाई 5:

- स्वरों के वाक्यांशों से रागों को पहचानने के साथ-साथ प्रस्तावित रागों का समालोचनात्मक अध्ययन तथा उनका विस्तार करना
- राग विवरण, राग पहचान

प्रदर्शन कला -320

भैरव

बागेश्री

शुद्ध सारंगी

मालकौंस

हिंदुस्तानी स्वर

इकाई 1:

- अलंकार, वर्ण, कान, मींद, खटका, मुकीं, गमक का संक्षिप्त अध्ययन।
- निम्नलिखित का संक्षिप्त अध्ययन

सदर, दादरा, ग्राम, मुरछाना, आलाप, तान।

इकाई 2:

निम्नलिखित का अध्ययन

- रागों का वर्गीकरण- प्राचीन, मध्यकालीन, प्रथम और आधुनिक
- रागों के समय सिद्धांत का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3:

निम्नलिखित का विस्तृत अध्ययन:

1. संगीत रत्नाकर
 2. संगीत पारिजात
- अब्दुल करीम खान, फैयाज खान, बड़े गुलाम अली खान, कृष्णा राव शंकर पंडित का जीवनवृत्त और योगदान

इकाई 4:

- थाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन के साथ ताल अंकन के साथ निर्धारित तालों का विवरण:

झपटला

रूपाकी

तिलवाड़ा

धामर

- तानपुरा के विभिन्न भागों का अध्ययन और ट्यूनिंग

प्रदर्शन कला -320

इकाई 5:

- स्वरों के वाक्यांशों से रागों को पहचानने और उन्हें विस्तृत करने के साथ-साथ निर्धारित रागों का आलोचनात्मक अध्ययन
- निर्धारित रागों की रचनाएँ अंकन में लिखना। भैरव बागेश्री शुद्ध सारंग मालकौस

C2: कर्नाटक संगीत (रागात्मक वाद्य)

इकाई 1: भारतीय संगीत का इतिहास और सिद्धांत

- निम्नलिखित लक्षण ग्रन्थों के ज्ञान की रूपरेखा:
संगीता सरमृत संगीत सम्प्रदाय प्रदर्शिनी, स्वरमेलकलानिधि और रागविबोध, बृहदेसी।
- लघु जीवन रेखाचित्र और निम्नलिखित का योगदान:
अन्नामाचार्य, स्वाति तिरुनल, क्षेत्रराज, महा वैद्यनाथ अय्यर, पटनाम सुब्रमण्य अय्यर, रामनाद श्रीनिवास अयंगर मैसूर दोराईस्वामी अयंगर, द्वारम वेंकटस्वामी, नायडू कराइकुडी ब्रदर्स, मैसूर वासुदेवचर
- संगीत शैली, कृति, तिरुप्पुगज, पदम, जवाली और तिलाना का संक्षिप्त अध्ययन।
- मनोधर्म संगीत का विस्तृत अध्ययन
- निम्नलिखित की परिभाषा और स्पष्टीकरण: जनक, रागों की जन्य प्रणाली, भाषा, उपांग, वरजा, वक्र राग, गमक, अरुडी, एडुप्पु, जाति, प्रबंध, ग्राम, मूर्छना, जाति और विशेष प्रयोग।
- निर्धारित रागों का विवरण
- अभ्यर्थी को निर्धारित रागों में कृति/कीर्तन को अंकन में लिखने में सक्षम होना चाहिए।
- अभ्यर्थी को बजाने की बुनियादी तकनीकों के साथ-साथ चुने गए वाद्यों के निर्माण का वर्णन करने में सक्षम होना चाहिए
- अभ्यर्थी को सामान्य रूप से वाद्यों के वर्गीकरण की एक रूपरेखा और चुने गए वाद्यों के संक्षिप्त इतिहास का ज्ञान होना चाहिए

कर्नाटक संगीत (गायन)

निम्नलिखित लक्षण प्रधान की एक रूपरेखा ज्ञान में संगीत सरमृत, संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी, स्वरमेलकलानिधि, राग विबोध, बृहदेसी।

लघु जीवनवृत्त और निम्नलिखित का योगदान:

अन्नामाचार्य, क्षेत्रराजना, स्वाति तिरुनल, गोपालकृष्ण भारती, महा वैद्यनाथ अय्यर, पटनाम सुब्रमण्या अय्यर। रामनाद श्रीनिवास अयंगर, मैसूर वासुदेवचर।

संगीत शैलियों का एक अध्ययन: - कृति, पदम, जावली, तिलाना, तिरुप्पुगज, रागमालिका।

मनोधर्म संगीत का विस्तृत अध्ययन।

प्रदर्शन कला -320

निम्नलिखित की परिभाषा और स्पष्टीकरण:-

- जनक-जन्य राग, भाषा, उपांग, वरजा, वक्र राग, गमक, अरुडी, एडुप्पु, प्रबंधम, ग्राम, मूर्छना, जाति
- व्यावहारिक गतिविधि में निर्धारित रागों के लक्षण
- अभ्यर्थी को निर्धारित रागों में कृति/कीर्तन को अंकन में लिखने में सक्षम होना चाहिए।
- संगीत वाद्ययंत्रों का संक्षिप्त विवरण, उनका निर्माण, और बजाने की तकनीक।
- सामान्य रूप से संगीत वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण।

C3: रवींद्र संगीत

रवींद्र संगीत:

- a. आकार मालिक अंकन प्रणाली का ज्ञान।
- b. रवींद्रनाथ टैगोर का जीवनवृत्त (संगीत रचना को समाहित करना)

अन्य प्रकार के संगीत

निम्नलिखित का जीवनवृत्त और उनका संगीतमय योगदान:

- a. अतुल प्रसाद सेनी
- b. काजी नजरूल इस्लाम
- c. गिरीश चंद्र घोष

(ii) निम्नलिखित में से किसी एक का इतिहास:

- a. क्षेत्रीय लोक गीत (भटियाली, बाउल, झुमुर, भवैया)।
- b. कीर्तन।

C4. तालवाद्य

इकाई 1: हिंदुस्तानी तालवाद्य

- निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी:
उथान, पेशखर, चक्रदार और बाँट
- निम्नलिखित का तुलनात्मक अध्ययन:-
 - a. चौताल-एकताल
 - b. झपताल-सुल्ताना
 - c. तीनताल-तिलवाड़

प्रदर्शन कला -320

इकाई 2:

- लयकारी और इसके प्रकार
- तबला या पखावाज के घरानों का संक्षिप्त विवरण

इकाई 3:

तबला या पखावाज का इतिहास

हिंदुस्तानी संगीत के मध्यकालीन और आधुनिक काल का संक्षिप्त इतिहास, विशेष रूप से तालवाद्य के क्षेत्र में

इकाई 4:

- पंडित किशन महाराज, उस्ताद करमतुल्लाह खान और उस्ताद जाकिर हुसैन की जीवनी
- राजा छत्रपति सिंह, गुरु पुरुषोत्तम दास और पंडित पागल दास की जीवनी और शैली की मुख्य विशेषताएं।

इकाई 5:

निर्धारित तालों और रचनाओं का लेखन अंकन

पाठ्य-सामग्री और रचनाओं के दिए गए भाग से ताल की पहचान।

सुझावित ताल: तीनताल या आदि ताल, रूपक या तेवर

ताल वाद्य (मृदंगम)

- चतुर्दंडी प्रकाशिका, संगीता रत्नाकर, रागविबोध, स्वरमेला कलानिधि में ताल और तालवाद्य के विशेष सन्दर्भ में निम्नलिखित लक्षण ग्रन्थों की रूपरेखा का ज्ञान।
- लघु जीवनवृत्त और निम्नलिखित प्रकाशकों का योगदान: नीदमंगलम मीनाक्षी सुंदरम पिल्लई, तंजौर वैद्यनाथ अय्यर, पालघाट मणि अय्यर, उमैयालपुरम कोडंडा रमैया, पुदुक्कोट्टई स्वामीनाथ पिल्लई, पलानी सुब्रमण्यम पिल्लई, विलवाट्री अय्यर।
- संगीत शैलियों का अध्ययन, पल्लवी, सोलुकट्ट, तिलाना, पदम और जावली
- निम्नलिखित की परिभाषा और स्पष्टीकरण: पदगर्भम, अरुडी, एडुप्पु, गति-भेदा, अनुलोम, प्रतिलोम, तिस्राम, त्रिकालम, ठेका, 108 तलास, षडंगस, तिरुप्पुगज ताल, ताल वाद्य समूह।
- अभ्यर्थियों को सामान्य रूप से तालवाद्य के वर्गीकरण की एक रूपरेखा का ज्ञान होना चाहिए और चयनित वाद्य का एक संक्षिप्त इतिहास

- तकनीकी शब्द: विलम्ब, मध्य, द्रुत, अतितम, अनागतम, परन, कलाप्रमाणम, घुमकी, कोन्नाक्कोल, छोरु, वरु, टोप्पी
- अभ्यर्थी को मौलिक संरचना, तकनीक और मोर्सिंग, तबला, चेंडा, एडक्का और गेट्टू वाद्यम जैसे अन्य तालवाद्य वाद्यों को बजाने का ज्ञान होना चाहिए